सुशासन

(तत्वे आणि पद्धती)

संपादक

डॉ. नितीन गौरखेडे

डॉ. मुक्ता सोमवंशी

सुशासन

(तत्वे आणि पद्धती)

■ डॉ. नितीन गौरखेडे

डॉ.मुक्ता सोमवंशी

■ प्रथम आवृत्ती – २५ , डिसेंबर २१)

© प्रकाशक व संपादक

■ प्रकाशक

आधार पब्लिकेशन, अमरावती.

हनुमान मंदिराजवळ, पाठ्यपुस्तक मंडळा समोर,

वि.म.वि.कॉलेज मागे, अमरावती

मो. ९५९५५६०२७८

email- aadharpublication@gmail.com

■ मुखपृष्ठ संकल्पना

विलास पवार

सरिता ग्राफिक्स, अमरावती

■ अक्षरजुळवणी

सरिता ग्राफिक्स,

कठोरा रोड, अमरावती

■ Price : 400/-

ISBN- 978-93-91305-63-5

सुचना:- सदर अंकामध्ये प्रकाशित झालेल्या लेखास, संपादक, प्रकाशक, मालक, मुद्रक जबाबदार राहणार नाही. या अंकामध्ये प्रकाशित झालेले लेख लेखकाचे त्यांचे वैयक्तिक मत आहे.

Late Ramesh ... College, Sonpeth

अनुक्रमणिका

अ. क्र.	लेख	लेखक	पु.क्र.
1	सुशासनाच्या भुमिकेत झालेला बदल	प्रा.डॉ.एम.एफ.राऊतराहे	1
2	सुशासन आणि महात्मा गांधी तंटामुक्त गाव मोहीम	प्रा. सुरेशलक्ष्मण शहापुरे	8
3	राज्य का आधार सुशासन की अवधारणा एक अध्ययन	डॉ.टी.एल.मिर्झा	12
4	सुशासन : उगम आणि विकास	प्रा.डॉ. नितीन दादाराव गौरखेडे	25
5	सुशासन की लोकतांत्रिक संकल्पना	डॉ. मनीष कुमार साव	28
6	सुशासनः समस्या एवं उपाय	प्रा.डॉ.कोनेरू बाबन्रा डुमलवाड	34
7	सुशासनातील अडथळे	प्रा डॉ.आंधळे बी.व्ही.	40
8	सुप्रशासन समस्या व उपाय	सौ.प्राची चैतन्य पाटील	47
9	लोकसेवेचा हक्क : सुशासन, सर्वसमावेशक विकास आणि मानवी हक्क	डॉ. संदीप भि. काळे	53
10	सुशासन से प्रशासनिक दर्शन	डॉ कुलकर्णी वनिता बाबुराव	61
11	सुशासनासाठी विरोधी पक्षाची अवश्यकता	प्रा. डॉ. विजयकुमार सोन्नर	67
12	सुशासन संकल्पना आणि महत्व	देवेंद्रसिंग नरसिंग सोळंके	77
13	माहितीचा अधिकार आणि सुशासन	प्रा.डॉ.वसंत पांडुरंग सरवदे	82

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

सुशासन से प्रशासनिक दर्शन

डॉ कुलकर्णी वनिता बाबुराव

हिंदी विभागाध्यक्षा कै.रमेश वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ, ता.सोनपेठ

जि. परभणी पिन कोड -431516

दूरभाष -94 2313 8878, मेल-kulkarnivanita02@gmail.com

प्रास्ताविक —

हम भारतीय बड़े सौभाग्यशाली है की आधुनिक युग में हमारा प्रजातंत्र न केवल आक्षुण्ण है बल्कि प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। देश ने शिक्षा, विज्ञान, स्वास्थ्य और तकनीकी क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। सुशासन सरकार के तीन लक्षण है— पारदर्शी, एवं उत्तरदाई सरकार। यह तीनों ही लोकतांत्रिक सरकार के मूलाधार है। सरकार मुख्यतः जनता के लिए कार्य करती है तथा उन्हें सामाजिक, धार्मिक एवं सामान्य सेवाएं प्रदान करती है। यह सेवाएं नागरिक केंद्रित होने के कारण नागरिकों द्वारा बहुतायत में प्रदान की जाती है। प्रत्येक नागरिक सरकार में सेवा प्रदान प्रदाता विभाग से यह अपेक्षा करता है कि, उसे वांछित सेवा शीघ्र एवं बिना किसी अवरोध के समय पर मिल जाए। विकास की और बढ़ रहे लगभग सभी राज्य यह प्रयास कर रहे हैं कि, वे अपने नागरिकों को बेहतर सेवाएं समय पर व कुशलतापूर्वक प्रदान कर सुशासन के सिद्धांतों को साकार करें। सुशासन एक सफलतामुलक समाज के निर्माण का आश्वासन देता है।

सुशासन देश की प्रगति की कुंजी है। सुशासित राष्ट्र एक 'आदर्श' राष्ट्र होता है। यह खुशी की बात है कि हमारे देश में अत्यंत सकारात्मक माहौल में सुशासन की पहल शुरू हुई है। टिकाऊ मानव विकास, स्वस्थ एवं जीवंत लोकतंत्र मजबूत और प्रगतिशील राष्ट्र, अवसरों की समानता तथा जवाबदेही राजनीतिक नेतृत्व के लिए हमें सुशासन की दिशा में मजबूती के साथ सधे हुए कदम बढ़ाने होंगे।

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth

सुशासन का अर्थ और परिभाषा —

'शासन ' शब्द मे 'सु ' उपसर्ग लगने से 'सुशासन ' शब्द का जन्म होता है 'सु' उपसर्ग का अर्थ है शुभ, अच्छा, मंगलकारी आदि भावों को व्यक्त करने वाला होता है। सुशासन व्यक्ति को भ्रष्टाचार एवं लालफीतशाही से मुक्त कर प्रशासन को स्मार्ट, साधारण, नैतिक, उत्तरदाई योग्य जिम्मेदारियोग्य, पारदर्शी बनाता है। 'शासन 'आदिमयुग की कबीलाई संस्कृति से लेकर आज तक की आधुनिक मानव सभ्यता के विकास क्रम में अलग-अलग विशिष्ट रूपों में प्रणाली के तौर पर विकसित और स्थापित होती आई है। सुशासन का सामान्य अर्थ है, अच्छा शासन। वह शासन जो जनता की अपेक्षा पर खरा हो, सुशासन माना जाता है। लेकिन इस शब्द को विभिन्न अर्थ दिए गए हैं। कुछ ऐसा लोकतांत्रिक शासन मानते हैं जो प्रभावी और कार्य कुशल हो। रिचर्ड जेफरिन के अनुसार "सुशासन ऐसा उद्देश्योन्मुख और विकासोन्मुख प्रशासन है जो जनता के जीवन- स्तर में सुधार हेतु प्रतिबद्ध हो। इसप्रकार से सुशासन का तात्पर्य अच्छी शासन व्यवस्था से है। सुशासन का अर्थ है न्याय पर आधारित शासन। सुशासन शब्द अंग्रेजी के " गुड गवर्नेंस " शब्द के हिंदी रूपांतरण के रूप में प्रयुक्त होता है। यह शब्द वर्तमान लोकतंत्र के साथ अभिन्न है। हम जिस वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में रहते हैं वह अंग्रेजी के "डेमोक्रेसी" शब्द का हिंदी रूपांतरण है। और इस का उद्भव भी पश्चिमी देश से है, इसलिए हम इस लोकतंत्र के साथ उनसे जुड़े दूसरे शब्द भी उसी अनुरूप लेते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी सुशासन की कल्पना दी है यानी - लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, आधुनिक शिक्षा प्रणाली, स्वास्थ्य, गरीबी उन्मूलन के कार्यक्रमों बच्चों वृद्धो और महिलाओं की सुरक्षा, मानव अधिकार, श्रम के नियम, व्यापार के नियम न्याय प्रणाली आदि। **सुशासन की अवधारणा —**

सुशासन के बारे में विश्व एवं भारत के न जाने कितने चिंतकों, मनीषियों, राजनेताओं ने सुशासन के बारे में गहन विचार किया। यूनान के दार्शनिक प्लेटो ने अपने आदर्श राज्य, राजा, न्याय व्यवस्था आदि का विस्तृत वर्णन किया। अरस्तु के चिंतन में राज्य, संविधान।कानून शासक नागरिक आदि का उस समय के संदर्भ में विशद वर्णन है। देखिए अरस्तु की कुछ पंक्तियां- " राज्य कुलों और ग्रामों का एक ऐसा समुदाय है जिसका

Late Ramesh Warpudkar ACS College, Sonpeth, Dist. Parbhani

उद्देश्य पूर्ण और आत्मनिर्भर जीवन की प्राप्ति है "1 "राज्य का उदय जीवन के लिए हुआ और सुजीवन के लिए उसका अस्तित्व बना हुआ है।"2

हाॅब्स, लॉक रूसो बेंथम मिल एक लंबी श्रृंखला उन विचारकों की है जिन्होंने अपनी दृष्टि से और तत्कालीन स्थान, समय और परिस्थितियों के अनुसार सुशासन की कल्पना की है। लेकिन सुशासन का जितना गहरा और विषद विचार भारतीय मनीषियों ने किया उतना दुनिया में कहीं नहीं हुआ। राज्य, राजा, प्रजा अधिकारी सबके कर्तव्यों का जो वर्णन है वही वस्तुतः सुशासन है। महाभारत के शांति पर्व में भीष्म धर्मराज युधिष्ठिर से कहते हैं कि " धर्मानुवर्ती राजा का यह कर्तव्य है कि वह अपना प्रिय परित्याग कर वही करें जिससे लोकहित हो।"3 यानी जिनमें शासन की जनता के लिए निर्णय करने की जिम्मेदारी है उनके एक-एक कदम एक एक निर्णय का लक्ष्य केवल लोकहित ही होना चाहिए। उसमें हमारा कोई प्रिय है, अपना है अथवा उसका हित या अहित नहीं। सामाजिक न्याय या वर्तमान शासक के तीनों अंगों- कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका की निष्पक्षता के लिए इससे बड़ा मापदंड और कुछ हो सकता है क्या? स्वराज्य शासन का सविस्तार वर्णन ऋग्वेद में ही लिखा है- "व्यचिष्टे बहुपाच्ये स्वराज्ये या यतेमहि।"4 यानी बहुतों द्वारा जिसका पालन होता है, ऐसे स्वराज्य शासन में हम जनता की भलाई के लिए प्रयत्न करते रहेंगे कौटिल्य के अर्थशास्त्र से सुशासन के दस निर्देशक तत्व प्राप्त होते हैं। कौटिल्य के अनुसार "राजा राज्य का सेवक है जिसकी अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा नहीं होती।"5 वे कहते हैं राजा का सील ही प्रजा का सील है राजा या राज्य के अधिकारी जैसे होंगे प्रजा भी वैसी ही होगी। इसलिए वह राजा की योग्यता से लेकर अधिकारियों की नियुक्ति तक का विस्तृत मापदंड पेश करते हैं। इन सब का उद्देश्य राज्य को न्याय पालक एवं कल्याणकारी बनाना है, यही तो सुशासन है।

भारत ने 26 जनवरी 1950 को संविधान अंगीकार करते हुए "सत्यमेव जयते" शब्द यों ही नहीं अपनाया।"6 इसके पीछे की कल्पना यह थी कि, शासन व्यवस्था हमेशा सत्य के अनुपालन और उस पर विजय प्राप्त करने के लिए ही काम करती रहेगी।

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

सुशासन की विशेषताएं —

(1)सूचना एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करने वाला प्रशासन

(2) परिनान्मुखी प्रशासन

(3) नागरिकों के जीवन- स्तर में सुधार

(4) प्रभावी और कुशल प्रशासन

(5) उत्तरदाई मैत्रीपूर्ण एवं नागरिकों की देखभाल करने वाला प्रशासन।

(6) मितव्यई प्रशासन

(7)ई- गवर्नेंस पर आधारित नागरिक और सरकार को आमने-सामने लेने वाला प्रशासन

(8)लोक सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करने वाला प्रशासन

सुशासन से प्रशासनिक दर्शन—

एक मजबूत और विकसित भारत के स्वप्न को हम सुशासन से ही साकार कर सकते हैं। सुशासन के माध्यम से जहां हम अधिक सामाजिक अवसरों का सृजन कर सकते हैं, वहीं लोकतंत्र को अधिक सुरक्षित व मजबूत भी बना सकते हैं। सुशासन की अवधारणा "नागरिक पहले" के सिद्धांत पर टिकी है, क्योंकि इसी सिद्धांत पर चलकर जहां नागरिकों को सरकार के करीब लाया जा सकता है, वहीं सुशासन में जनता की भागीदारी एवं सक्रियता को भी बढ़ाया जा सकता है। सुशासन को प्रभावी एवं कुशल बनाने के लिए समयबद्धता आवश्यक होती है। अतः इस पर ध्यान दिया जाना भी जरूरी है। आज जब हम सुशासन के लिए चेते हैं, तो इसके लिए एक महत्वपूर्ण कदम सरकार की प्रक्रियाओं को सरल बनाना है। ताकि पूरी प्रणाली को पारदर्शी एवं तीव्र बनाया जा सके साथ ही यह भी आवश्यक है कि नागरिकों और सरकार के बीच भरोसे के संबंध कायम हो। सुशासन के लिए जहां यह आवश्यक है कि जन शिकायत का निपटारा जल्द से जल्द हो, वहीं यह भी जरूरी है कि तकनीक के जरिए देश के नागरिकों को सशक्त बनाया जाए। नागरिकों को बुनियादी सुविधा मिले। यातायात की अच्छी व्यवस्था हो। स्वच्छ जल एवं भोजन की उपलब्धता हो। समाज में अमन चैन हो ।अमीर- गरीब के मध्य अच्छे संबंध हो। क्षेत्रीयता एवं संकीर्णतावाद न हो। लोगों को भयमुक्त माहौल से मुक्ति मिले। इसके अलावा शासन की प्रक्रियाओं में संवेदनशीलता, दक्षता और मानवाधिकारों की पूरी तरह समानता भी

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth Dist Parbhani

प्रशासन के तत्वों में गिना जाता है। दुनिया के बदलते पर्यावरण और ब्रहत्तर समाजों की स्थापना ने लोक प्रशासन को मानवीय जीवन के प्रत्येक पहलू तक विस्तृत कर दिया है। राज्य की लोकतांत्रिक और लोक कल्याणकारी भूमिका ने प्रशासन पर व्यक्ति की निर्भरता को इतना बढ़ा दिया है कि प्रशासन समाज का प्रतिरूप सा बन गया है। डिमा ॅक के अनुसार- " दर्शन का अर्थ है विश्वासों और व्यवहारों का वह समूह जिसका उद्देश्य व्यक्तियों और संस्थाओं के कार्यों में उत्तमता श्रेष्ठता लाना है।"7 वस्तुतः दर्शन कसौटी पर कसे गए मूल्यों का वह समूह है जो प्रत्येक कार्य व्यवहार की दिशा को निर्धारित करता है।चूंकि लोक प्रशासन उन मानवीय व्यवहारों से सरोकार रखता है जो निश्चित लक्ष्य की ओर प्रेरित होते हैं। तथा जिनके कुछ मूल्य भी होते हैं, अतएंव आवश्यक हो जाता है कि प्रशासन का भी एक दर्शन विकसित किया जाए। प्रशासनिक व्यवस्था के मूल्यांकन का आधार उसकी व्यक्तियों को संतुष्टि दे पाने की क्षमता होनी चाहिए। डिमा ॅक के अनुसार यह नैतिक दर्शन ही है जो व्यक्ति और संगठन दोनों की आवश्यकताओं में समन्वय और संतुलन स्थापित करता है। और सभी संगठनों को स्थायित्व मिल जाता है। पीटर डकर ने भी डिमा ॅक का समर्थन करते हुए कहा कि, " व्यक्तियों और संगठनों के मूल्यों को समन्वित करना ही प्रशासन का उच्चतम सिद्धांत है और यही दर्शन और नैतिकता का क्षेत्र है।"

निष्कर्ष —

उत्तम अभिशासन का समग्र आशय एक ऐसी सहभागिता पूर्ण प्रणाली से है जिसमें जिन लोगों को जनता की ओर से शासन करने के लिए आमंत्रित किया जाता है वह ऐसे हो जो कि अपना सर्वोत्तम देने, लोगों की सेवा और भलाई करने उनकी समस्याओं को हल करने और उनका जीवन जीने योग्य संतोष पूर्ण तथा उल्लास पूर्ण बनाने की इच्छा से अभिप्रेरित हो। सुशासन में सरकार निजी क्षेत्र, गैर सरकारी संगठनों तथा सहकारिताओं के बीच सामंजस्य पूर्ण अंतर संबंध होता है। सरकार को जनता के लिए कुशल एवं प्रभावी सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। क्योंकि, जागरूक नागरिक वर्ग सरकार की सेवा सो सुदुर्दगी में अहम भूमिका निभा सकता है। सुशासन की अवधारणा राज्य और नागरिक समाज दोनों में सहभागिता, जवाबदेयता और पारदर्शिता के सिद्धांतों द्वारा लोकतांत्रिक ता लोकतांत्रिकिकरण की सिफारिश करता है। हम भारतीय बड़े

सौभाग्यशाली है कि आधुनिक युग में हमारा प्रजातंत्र न केवल आक्षुण्ण है, बल्कि प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। देश में शिक्षा, विज्ञान, स्वास्थ्य और तकनीकी क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है।

संदर्भ—

(1)En.wikiquote.org/wiki/Aristotle
(2)Files.libertyfund.org/pll/quotes/164.html.
(3)www.albout bharat.org/post/mahabharat
(4)vedapuran.nct
(5)www.saylor.org/site/wp-content/uploads/2021/06/ecino301-1.3.pdp
(6)Indian economic review,vol'xxxl,ho'l,l99'p.p.lol-108
(7)hindi libarary india.com

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani